''मैं नागरिक हूं''
(22:27, 28)

यह कहते हुए कि ''मैं बहुत ही गुस्से में थी!'' उसकी आंखों में चमक थी। रोमानियन के कानून की शिक्षा लेने वाली एक छात्रा, क्रिस्टिना बुनिया, बुखारे की गली के बच्चों पर *सैल्फ* मैगज़ीन में प्रकाशित एक लेख की बात कर रही थी। उसने ज़ोर देकर कहा, ''रोमानिया में हम सभी बीमार, बे-घर और बे-आस नहीं हैं। कोई हमारे देश की *अच्छी* बातों के विषय में क्यों नहीं बताता?''[1] उसने रोमानिया की सुन्दरता, रंगीन इतिहास व प्रभावशाली भविष्य की बात की। उसने स्पष्ट तौर पर रोमानिया की समस्याओं को स्वीकार किया। समस्याएं तो हर देश में होती हैं, परन्तु उसे रोमानी नागरिक होने पर गर्व था।

मुझे ऐसे लोगों से मिलकर प्रसन्नता होती है जो अपने देश के नागरिक होने पर गर्व महसूस करते हैं। अक्सर यह माना जाता है कि नागरिकता एक अमूल्य उपहार है। इस पाठ में, हम नागरिकता अर्थात नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों के विषय में बात करेंगे।[2]

प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस ने रोमी नागरिक होने के अपने अधिकारों पर ज़ोर दिया था।[3] उसे और सीलास को फिलिप्पी में अन्यायपूर्वक बन्दी बनाए जाने के बाद, पौलुस ने उन्हें छोड़ने आए लोगों से कहा, ''उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहराए बिना, लोगों के साम्हने मारा, और बन्दीगृह में डाला और अब क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएं'' (16:37)।

> प्यादों ने ये बातें हाकिमों से कह दीं, और वे यह सुनकर कि वे रोमी [नागरिक] हैं, डर गए। और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर बिनती की कि नगर से चले जाएं (16:38, 39)।[4]

जब यरूशलेम में एक रोमी सेनापति ने आदेश दिया कि पौलुस को ''कोड़े मारकर जांचो'' (22:24ख), तो पौलुस ने केवल एक सीधे से प्रश्न के साथ उस पिटाई की सज़ा को चुनौती दी थी: ''क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े मारो?'' (22:25ख)। पौलुस का यह दावा सुनकर उस कमांडर को कुछ संदेह हुआ:

> तब पलटन के सरदार ने उसके पास आकर कहा; मुझे बता, क्या तू रोमी है ? उसने कहा हां। यह सुनकर पलटन के सरदार ने कहा; कि मैंने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है: पौलुस ने कहा मैं तो जन्म से रोमी हूं (22:27, 28)।[5]

परन्तु, नागरिकता प्रमाणित होने के बाद पौलुस को बन्धन से जल्दी मुक्त कर दिया गया। ''... पलटन का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और मैंने उसे बान्धा है, डर गया'' (22:29ख)।

राज्यपाल फेस्तुस द्वारा संकेत देने पर कि पौलुस को मुकदमे की सुनवाई के लिए यरूशलेम भेजा जाएगा (जो इस प्रेरित की सेहत के लिए ख़तरनाक था), पौलुस ने यह कहकर कि ''मैं कैसर की दुहाई देता हूं'' (25:11ग) पहले से ही यात्रा की तैयारी कर ली।[6]

ये कहानियां नागरिक के विशेष अधिकारों और उन अधिकारों को अपनाने के लिए मसीही के अधिकार के बारे में कुछ कहती हैं। एक प्रेरित के रूप में पौलुस के जीवन के संदर्भ में अध्ययन करने पर, वे हमें गहराई तक भी ले जाती हैं कि अपने अधिकारों के लिए कब ज़ोर देना चाहिए और कब नहीं। अपने अध्ययन में हम एक नागरिक के कर्तव्यों के बारे में भी कुछ सुझाव देना चाहते हैं।

नागरिकता के अधिकार

नये नियम के समय रोमी नागरिकता प्राप्त होना बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। यह बात इस तथ्य से स्पष्ट हो जाती है कि रोमी सेनापति ने उस नागरिकता को पाने के लिए ''बहुत रुपये'' दिए थे (22:28क)। एक रोमी नागरिक को वे अधिकार मिलते थे जो किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त नहीं होते थे। पौलुस की रोमी नागरिकता ने ...

> न केवल उसे एक नगर में, बल्कि पूरे [रोमी] जगत में लाभ पहुंचाया और उसे हर जगह बड़ी प्रतिरक्षा और अधिकार दिलवाए। संक्षेप में यह सब क्या-क्या थे, हमें ज्ञात नहीं है, परन्तु हम इतना जानते हैं कि ... प्रत्येक [रोमी] नागरिक को शर्मनाक दण्ड, जैसे कि छड़ियों या चाबुकों से कोड़े मारने और [विशेषकर] क्रूस पर चढ़ाने से छूट थी; उन्हें कुछ सीमाओं में सम्राट के सामने अपील करने का अधिकार था।[7]

एक रोमी नागरिक के बहुत से अधिकार वैधानिक प्रणाली से सम्बन्धित थे, जिनमें सुनवाई के अधिकार, अपने ऊपर लगे आरोपों को जानने का अधिकार, अपने आरोपियों का सामना करने के अधिकार (25:16) के अलावा यदि उसे विश्वास हो कि उसके साथ न्याय नहीं हो रहा है तो उसे रोम में अपील करने का अधिकार भी था (25:10-12)। हम में से कई लोग ऐसे अधिकारों को महत्व नहीं देते हैं, परन्तु पौलुस के दिनों में उनका बहुत महत्व था।[8] जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने टिप्पणी की, ''हम ऐसी महान व्यवस्था की प्रशन्सा ही

कर सकते हैं, जिसमें, एक दूरस्थ इलाके में, और जेल की दीवारों के भीतर एक छोटी सी घोषणा से कि मैं एक [रोमी] नागरिक हूं, उत्पीड़न के इतने बड़े साधन पल में ढेर हो सकते थे।''[9] पौलुस के शब्दों ''मैं कैसर की दुहाई देता हूं [कैसरम अपेल्लो]'' के शक्तिशाली प्रभाव के बारे में आर. बी. राखम ने ऐसी ही टिप्पणी की: ''इस प्रकार दो शब्द कहकर ... पौलुस ने अपने आपको यहूदियों की शक्ति से मुक्त करा लिया।''[10]

एक रोमी नागरिक के रूप में पौलुस के अधिकारों पर विचार करने पर, हमें एक बात उलझा देती है कि, उसने कई बार अपने अधिकारों पर ज़ोर दिया और कई बार नहीं। प्रेरितों 16, 22 और 25 की घटनाओं से यह स्पष्ट है कि पौलुस ने कई बार अपने अधिकारों पर ज़ोर दिया परन्तु वह अपने अधिकारों की मांग हर अवसर पर नहीं करता था।

पौलुस पर आई विपत्ति के बारे में उसके वक्तव्यों में से एक पर विचार करें। यह कहने के बाद कि उसे ''कई बार पीटा गया,'' उसने दो उदाहरण दिए: ''पांच बार मैंने यहूदियों के हाथ से उनतालीस कोड़े खाए। तीन बार मैंने बैंतें खाईं'' (2 कुरिन्थियों 11:23-25)। बैंतों से मारना दण्ड देने का एक रोमी तरीका था। प्रेरितों 16:22, 23 में हमने देखा कि पौलुस को फिलिप्पी में रोमी अधिकारियों ने बैंतों से पीटा था; परन्तु अन्य दो बार हुई पिटाई को लूका ने दर्ज नहीं किया।

प्रेरितों 16 में पौलुस की पिटाई के वर्णन का अध्ययन करते हुए, हम इस प्रश्न से उलझ गए थे कि ''पौलुस और सीलास ने अपने रोमी नागरिक होने की बात हाकिमों को बताकर दुर्व्यवहार से अपना बचाव क्यों नहीं किया?'' हम केवल एकमात्र सुझाव यही दे पाये थे कि ''क्या पता उन्होंने कोशिश की हो, परन्तु अधिकारियों तक उनकी आवाज़ न पहुंच सकी हो; परिस्थिति भी तो बहुत ख़राब थी।''[11] हो सकता है ऐसा एक बार तब हुआ हो जब पौलुस की पिटाई करने की तैयारी हो रही थी, परन्तु क्या तीन अलग-अलग अवसरों पर ऐसा हो सकता था? लगता नहीं है। हमें इस सम्भावना पर विचार करना चाहिए कि, किसी कारणवश, पौलुस हर बात में रोमी नागरिक होने के अपने अधिकारों की दुहाई नहीं देता था।

यदि पौलुस ने अपने अधिकारों पर ज़ोर नहीं दिया, तो यह पत्रियों की उसकी शिक्षा के अनुरूप है। पौलुस ने सिखाया कि *यदि ऐसा करने से मसीह के उद्देश्य को पूरा करने में मदद मिलती है तो एक मसीही को अपने अधिकारों को त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए।* उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों में उसके शब्दों पर ध्यान दें: अध्याय 6 में उसने कलीसिया पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव के कारण उन्हें अपने वैधानिक अधिकार त्यागने के लिए कहा था। उसने लिखा ''अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते?'' (आयत 7ख)। अध्याय 8 में उसने ज़ोर दिया कि यदि मांस खाने से किसी भाई को ठोकर लगती हो तो इस अधिकार का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए (आयत 13)।[12] अध्याय 9 में उसने कहा कि मण्डली की भलाई के लिए मैंने कुरिन्थुस की कलीसिया से वेतन लेने के अपने अधिकार को त्याग दिया था (आयतें 1-23)।

पौलुस ने कभी-कभी रोमी नागरिक होने के अपने अधिकार को क्यों त्यागा? आइए इस प्रश्न को विस्तार से देखते हैं: उसने कई बार उन अधिकारों पर ज़ोर क्यों दिया, और कई बार क्यों छोड़ दिया था? उन कहानियों का अध्ययन करते हुए जिनमें पौलुस ने एक रोमी नागरिक के रूप में अपने अधिकारों पर ज़ोर दिया था, मैंने सुझाव दिया था कि उसने ऐसा व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि मसीह के कार्य में मदद करने के लिए किया था। अध्याय 16 की घटना के सम्बन्ध में, मैंने यह अवलोकन किया:

> पौलुस ने रोमी नागरिक के रूप में अपने अधिकारों पर नगर के हाकिमों को मारने के लिए ज़ोर नहीं दिया (रोमियों 12:17, 19)। बल्कि, उसने अपने पीछे आने वाले जवान मसीहियों के लिए एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया। इसकी व्याख्या किए बिना कि उनका संस्थापक गिरफ्तार क्यों हुआ, पीटा क्यों गया, जेल में क्यों डाला गया, और फिर अचानक संदेह के घेरे में नगर क्यों छोड़ गया और भी बहुत सी समस्याएं आनी थीं (फिलिप्पियों 1:28-30)।[13]

जब हमने पौलुस को कोड़ों से बचते हुए, देखा था, तो मैंने ऐसी ही बात पर ज़ोर दिया था:

> प्रेरितों 21 में पौलुस ने अपनी नागरिकता की घोषणा इसलिए की क्योंकि वहां उसकी मृत्यु से प्रभु के कार्य में मदद नहीं, बल्कि हानि होनी थी। पौलुस किसी को दुःखी करने वाला आदमी नहीं था; उसने किसी ''शहीद कॉम्पलैक्स'' का सहारा नहीं लिया था। प्रभु चाहता तो वह मरने के लिए तैयार था (प्रेरितों 21:13; फिलिप्पियों 1:21, 23), परन्तु वह अपना जीवन बेकार में गंवाना नहीं चाहता था।[14]

फिर, कैसर के सामने पौलुस की अपील पर विचार करते हुए मैंने संकेत दिया था कि पौलुस ने महासभा के हाथों मृत्यु से बचने और अन्त में रोम पहुंचने के लिए अपने अधिकारों का इस्तेमाल किया (23:11)। मैंने यह सुझाव भी दिया था कि पौलुस की अपील में ''परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध (समयोचित चिन्ता) देखा जा सकता है''-परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के और भी कई सम्भावित लाभ गिनाए गए थे।[15]

एक जटिल मुद्दे को आसान करने का जोखिम उठाकर, मैं सुझाव देता हूं कि जब भी पौलुस को लगा कि इससे प्रभु के उद्देश्यों को लाभ मिलेगा, उसने अपने रोमी नागरिक होने के अधिकारों पर ज़ोर दिया, और केवल उसकी अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताएं, विचार, या सुख दांव पर लगे होने पर अपने अधिकारों पर ज़ोर नहीं दिया।

अधिकारों के प्रति पौलुस के व्यवहार को ध्यान में रखते हुए, मैं कुछ सुझाव देता हूं जिनसे हम सब शिक्षा ले सकते हैं:

(1) जो भी अधिकार आपको मिला है उसके लिए प्रभु का धन्यवाद करें। कुछ अधिकार ''प्राकृतिक'' या ''मानवीय'' हैं। अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा में जीवन, स्वतन्त्रता, और प्रसन्नता को जीवन के मौलिक अधिकार कहा गया है।[16] फिर भी कुछ अधिकार हैं जिनकी गारन्टी राज्य की ओर से दी जाती है। अमेरिका के बिल ऑफ़ राइट्स[17] अर्थात अधिकारों से सम्बन्धित विधेयक में इन्हें बोलने की आजादी, धर्म की आजादी, प्रेस की आजादी और इकट्ठे होने के अधिकार कहा गया है।[18] अधिकारों से संबंधित विधेयक में एक और अधिकार की गारन्टी है जिसे ''तुरन्त और सार्वजनिक मुकदमे का अधिकार'' कहा जाता है।[19] इंग्लैंड और फ्रांस सहित दूसरे कई देशों में भी बिल ऑफ़ राइट्स हैं। आपके देश में भी इस प्रकार के अधिकार हो सकते हैं और नहीं भी, परन्तु जो भी अधिकार आपको मिले हैं, उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दीजिए।[20]

(2) पौलुस के उदाहरण से शिक्षा मिलती है कि एक नागरिक के रूप में, विशेषकर जब राज्य की उन्नति में योगदान देना हो, तो एक मसीही व्यक्ति शास्त्र के अनुसार अपने अधिकारों का लाभ उठा सकता है।[21]

(3) जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात यही नहीं है कि ''सामने जो भी आए उसे ले लो।'' संसार भर में क्रोधित लोग अपने हाथ हिला-हिलाकर चिल्ला रहे हैं, ''मुझे वही चाहिए जो मेरे लिए सबसे अच्छा है। मुझे मेरे अधिकारों का पता है, मैं तो अपना अधिकार लेकर रहूंगा ताकि मेरा जीवन सुधर सके!'' संसार को जिस बात की आवश्यकता है वह यह है कि बहुत से नागरिक अपने सिरों को हिलाते हुए कहें, ''मुझे वही चाहिए जो मेरे देश के लिए सबसे अच्छा है। मैं अपने अधिकारों को जानता हूं, परन्तु मेरी इच्छा है कि देश को मज़बूत बनाने के लिए जो भी बलिदान करना पड़े, मैं करूंगा।'' विशेषकर संसार को ऐसे मसीहियों की आवश्यकता है जो अपने अधिकारों को अपने परिवारों, कलीसिया और समाज की भलाई के लिए जिसमें वे रहते हैं, त्यागने के लिए तैयार हों।

नागरिक होने की ज़िम्मेदारियां

इस सिद्धांत में बताया गया है कि नागरिकों को विशेष अधिकार मिले हैं, से एक निष्कर्ष निकलता है कि नागरिकों की कुछ ज़िम्मेदारियां भी हैं। यदि कोई जिम्मेदारियों को स्वीकार नहीं करना चाहता है, तो उसे अधिकारों पर भी ज़ोर नहीं देना चाहिए।

उदाहरण के लिए, सरकार के प्रति नागरिकों की ज़िम्मेदारियां हैं:

> सरकार के प्रति एक मुख्य ज़िम्मेदारी को अंग्रेज़ी के तीन शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है-pay, pray और obey अर्थात अदा करें, प्रार्थना करें, और आज्ञा मानें: (1) हमें कर *अदा करने* चाहिए। मत्ती 22:17-21 में यीशु ने यह बात स्पष्ट कर दी थी और पौलुस ने इस पर रोमियों 13:6, 7 में पुन: ज़ोर दिया। (2) हमें सभी सरकारी अधिकारियों के लिए *प्रार्थना करनी* चाहिए (1 तीमुथियुस 2:1, 2)। (3) हमें देश के कानून का *पालन करना* चाहिए।[22] पौलुस की स्पष्ट शिक्षा [रोमियों

13:1-5 में] के अलावा, पतरस ने लिखा, ''प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन रहो, राजा के ... और हाकिमों के, ... क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, ...'' (1 पतरस 2:13-15)।[23]

नागरिक के रूप में हमारी मुख्य ज़िम्मेदारी को व्यक्त करने का एक और ढंग है कि हम *अच्छे* नागरिक बनें। स्थानीय प्रबन्ध के विषय में पौलुस ने कहा, ''यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी'' (रोमियों 13:3)। पतरस ने लिखा,

> प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन रहो, ... वे ... सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए उसके भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो (1 पतरस 2:13-15)।

पौलुस ने महासभा के सामने खड़े होकर कहा, ''हे भाइयो, मैंने आज तक परमेश्वर के लिए बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है'' (23:1ख)। मूलतः, इस प्रेरित ने कहा, ''मैंने आज के दिन तक परमेश्वर के सामने बिल्कुल शुद्ध विवेक से *एक नागरिक के रूप में* जीवन बिताया है।''[24] वे पौलुस की रोमी, तरसुस (21:39) या यहूदी नागरिकता में से किसी को भी मानते, उसने उनके धार्मिक या राजनैतिक आरोपों के सम्बन्ध में निर्दोष होने की अपील की।

मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की अधिकतर इच्छा प्रत्यक्ष रूप में देश की मजबूती में योगदान देना है अर्थात निर्वाह के लिए काम करना (2 थिस्सलुनीकियों 3:10), अपनों का ध्यान रखना (1 तीमुथियुस 5:8), दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना (1 कुरिन्थियों 13:5), मजबूत परिवार बनाना (इफिसियों 5:22-6:4); शांति से रहना (रोमियों 12:18); इत्यादि। किसी मसीही का अपने देश के लिए सबसे बड़ा योगदान धर्मी होना है (नीतिवचन 14:34)![25]

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, दिखाया गया है कि मसीही लोगों ने न कभी दंगे आरम्भ किए, और न ही विद्रोह की योजना ही बनाई। दूसरे लोगों ने ऐसे काम करके उसका आरोप मसीही लोगों पर लगा दिया, परन्तु स्वयं मसीही लोग परमेश्वर का भय मानने व कानून का पालन करने वाले नागरिक थे। लूका ने चाहा कि संसार जान ले कि एक अच्छा मसीही एक अच्छा नागरिक भी होता है।

सारांश

मुझे उम्मीद है कि आप कह सकते हैं, ''अपने देश का नागरिक कहलाने में मुझे *प्रसन्नता* होती है।'' मुझे यह भी उम्मीद है कि आप अच्छे नागरिक बनकर वैसे काम करेंगे जो आपको करने चाहिए।

इस संसार के नागरिक होना बहुत बड़ी बात है, इससे हमें समझ आ जानी चाहिए कि स्वर्ग की नागरिकता का कितना महत्व है।[26] फिलिप्पी के लोग एक रोमी कॉलोनी के नागरिक होने पर गर्व करते थे, परन्तु पौलुस उन्हें बताना चाहता था कि ''हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं'' (फिलिप्पियों 3:20)। उसने इफिसुस के मसीही लोगों को बताया, ''तुम अब ... पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी ... हो गए'' (इफिसियों 2:19ख)। हम भी ''पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी'' (इब्रानियों 11:13) ही हैं, परन्तु हमारे ''नाम स्वर्ग पर लिखे हैं'' (लूका 10:20ग; देखिए इब्रानियों 12:23; प्रकाशितवाक्य 13:8; 20:12, 15; 21:27)।

स्वर्गीय राज्य के नागरिकों के रूप में अपने सारे अधिकारों की सूची देना इस समय सम्भव नहीं है। हमें परमेश्वर को पिता कहने का अधिकार मिला है (मत्ती 6:9)। हमें परमेश्वर के वायदों का दावा करने का अधिकार मिला है (इब्रानियों 8:6; 2 पतरस 1:4)। हमें परमेश्वर की आशिषें पाने का अधिकार मिला है (इफिसियों 1:3)। नागरिकों के रूप में हम ''एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश'' की ओर जा रहे हैं (इब्रानियों 11:16क; इब्रानियों 13:14 भी देखिए)।

हमारे अधिकारों के साथ ज़िम्मेदारियों का भी बड़ा ही निकट सम्बन्ध है। पौलुस ने फिलिप्पियों को यह बताकर कि उनका ''स्वदेश स्वर्ग पर है'' (फिलिप्पियों 3:20क), उन्हें चुनौती दी ''कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो'' (फिलिप्पियों 1:27क)। मूलत:, उसने कहा, ''*नागरिकों की तरह व्यवहार* करो'' (बार्कले वर्ज़न ऑफ़ न्यू टैस्टामेन्ट)।[27] प्रभु के राज्य के नागरिकों की तरह रहने में परमेश्वर के वचन से सलाह लेना (प्रेरितों 17:11), क्लेश में पड़े लोगों को शांति देना (2 कुरिन्थियों 1:3, 4), पवित्र लोगों के साथ मिलना (इब्रानियों 10:25) और बुराई से युद्ध करना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 6:12)।[28]

हो सकता है कि इस संसार में किसी देश का नागरिक बनने के लिए आपको अपनी पसन्द चुनने का अधिकार न मिले, परन्तु स्वर्गीय नागरिकता के लिए आपको अपनी पसन्द चुनने का अधिकार दिया जाता है। आपको फैसला करना है कि आप स्वर्गीय नागरिकता के अधिकारों को पाना चाहते हैं या नहीं और आप स्वर्गीय नागरिकता की ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करना चाहते हैं या नहीं। यदि आप परमेश्वर के राज्य के नागरिक नहीं हैं,[29] तो मैं आपसे बिनती करूंगा कि आप आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन की बात मानते हुए (प्रेरितों 2:38) पानी में डुबकी लेकर ''नये सिरे से जन्म'' (यूहन्ना 3:3) ले लें। यीशु कहता है, ''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 3:5)।

यदि आप पहले से ही उसके राज्य के नागरिक हैं तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि ''स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ'' (कुलुस्सियों

3:1ख, 2)। दूसरी ओर, यदि आप राज्य के नागरिक तो हैं, परन्तु *अच्छे* नागरिक नहीं हैं, तो ''चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर ...'' (प्रकाशितवाक्य 2:5; देखिए प्रेरितों 8:22)!

मैं चाहता हूं कि आप भी मेरे साथी नागरिक बन जाएं; मैं आपको एक दिन स्वर्ग में देखना चाहता हूं!

विज़ुअल-एड नोट्स

यदि आप अमेरिका जाएं या वहां रहते हों तो विज़ुअल-एड के रूप में इस्तेमाल करने के लिए अधिकारों के विधेयक की एक प्रति लें। आपको नॉरमन रॉकवैल के ''द फ़ोर फ्रीडम्स'' के प्रसिद्ध चित्र भी मिल सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]क्रिस्टिना बुनिया, ब्रासोव, रोमानिया में 30 जुलाई 1994 को लिया गया इन्टरव्यू। [2]''नागरिकों'' या ''नागरिकता'' से सम्बन्धित नये नियम के सभी शब्द ''नगर'' के लिए यूनानी शब्द *पोलिस* से लिए गए हैं। बेशक अंग्रेजी का ''Citizen'' शब्द ''City'' से ही लिया गया है। [3]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 95 में पौलुस की रोमी नागरिकता का पहली बार उल्लेख है। [4]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 16 पर प्रेरितों 16:35-40 पर नोट्स देखिए। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''खेद प्रकट कैसे करें'' में प्रेरितों 22:24-29 पर नोट्स सहित पाद टिप्पणी 44 और 45 देखिए। [6]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''पुनरावृत्ति-या स्मरण दिलाने वाला?'' में प्रेरितों 25:10-12 पर नोट्स देखिए। [7]जी. एच. ट्रेवर, ''सिटिज़नशिप'' *इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया, ed. जेम्स ऑर*। [8]संसार के कुछ भागों में आज लोग सब लोगों के लिए इस प्रकार के अधिकारों को पाने की कोशिश में अपने जीवन लगा देते हैं। [9]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* vol. 2। [10]आर.बी. रैकम, द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़।

[11]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन'' में नोट्स देखिए। सम्भव है कि उन्होंने न्यायाधीशों को बताया और उनकी बात सुनी भी गई, परन्तु उन पर विश्वास किसी ने नहीं किया। परन्तु, प्रेरितों 16:38 से हम यह मानेंगे कि न्यायाधीशों ने पहले उनके रोमी नागरिक होने के बारे में नहीं सुना था। और चर्चा के लिए ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 20 पर पाद टिप्पणी 26 देखिए। [12]1 कुरिन्थियों के 8 से 10 अध्याय मूर्तियों के सामने बलि किए हुए मांस को खाने के विषय में हैं। आम तौर पर बाज़ार में बिकने वाला सबसे अच्छा मांस पहले मूर्तियों को भेंट चढ़ाया गया होता था। यह बात उन नये मसीहियों के लिए बड़ी परेशानी वाली थी जो पहले मूर्तियों की उपासना करते थे; उनके लिए अपने दिमाग से इस बात को निकालना कठिन था कि वह मांस मूर्ति के सामने भेंट किया गया था। [13]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन'' में नोट्स देखिए। [14]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''खेद कैसे प्रकट करें'' की पाद टिप्पणी 45 देखिए। [15]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''पुनरावृत्ति-या स्मरण दिलाने वाला'' के अन्तिम पृष्ठ देखिए। [16]ध्यान दें कि प्रत्येक नागरिक का अधिकार *प्रसन्नता* पाना नहीं, बल्कि प्रसन्नता का *पीछा करना* है। [17]''बिल ऑफ राइट्स'' अमेरिकी संविधान के

पहले आठ संशोधनों को दिया जाने वाला प्रसिद्ध नाम है। [18]कई बार इन्हें ''चार स्वतन्त्रताएं'' कहा जाता है। [19]यह अधिकार अमेरिकी संविधान के छठे संशोधन में दिया गया है। रोमी नागरिकों से सम्बन्धित हमारे पाठ में पहले उल्लेखित अधिकारों की तरह ही उसके शब्द भी हैं: ''आरोप के प्रकार और कारण के बारे में जानकारी लेने का'' अधिकार, ''अपने विरुद्ध गवाहों का सामना करने का'' अधिकार, आदि। [20]संक्षेप में, ध्यान दें कि सुनने वालों को कौन से स्वाभाविक और राजनीतिक अधिकार मिलते हैं। यहां उद्देश्य किसी दूसरे देश में उपलब्ध सारे अधिकार न मिलने पर सुनने वालों को नाराज़ करना नहीं, बल्कि जो उनके पास है उसके लिए धन्यवाद देने के लिए तैयार करना है।

[21]कुछ विचार किया जा सकता है: पौलुस कानून भी जानता था और अपने अधिकार भी। मसीही लोगों के लिए कानून का बुनियादी ज्ञान होना लाभदायक हो सकता है। [22]देश के कानून द्वारा परमेश्वर के कानून का उल्लंघन करने में अपवाद रखा जाना चाहिए (प्रेरितों 5:29)। [23]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 174 और 175 पर नोट्स देखिए। [24]यूनानी शब्द का अनुवाद ''जीवन बिताया'' *पोलिस* शब्द से लिया गया है। पाद टिप्पणी 2 देखिए। ''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''यरूशलेम में ठुकराया गया'' में प्रेरितों 23:1 पर नोट्स भी देखिए। [25]मुख्य मसीही कर्त्तव्यों को सिखाने के लिए आवश्यकता के अनुसार इस प्वाइंट को विस्तार दिया जा सकता है। [26]यदि सुनने वालों को पूरे प्राकृतिक और राजनीतिक अधिकार नहीं मिलते, तो इस अन्तिम भाग में ज़ोर दिया जा सकता है कि ''हो सकता है कि संसार में एक नागरिक के रूप में आपको बहुत सी आशीषें न मिली हों परन्तु मैं आपको स्वर्गीय राज्य में मिलने वाली आशिषों के बारे में बताता हूं!'' [27]''व्यवहार करो'' *पोलिस* से लिए गए यूनानी शब्द का अनुवाद है (देखिए पादटिप्पणी 2)। [28]स्वर्गीय नागरिकता के अधिकारों तथा कर्त्तव्यों को आवश्यकता के अनुसार विस्तार दिया जा सकता है। [29]यदि आवश्यक हो, तो समझाना चाहिए कि यह कलीसिया की ही बात है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 97 पर ''राज्य/कलीसिया की स्थापना'' पर अतिरिक्त लेख देखिए।